2595

BEFORE THE HON'BLE NATIONAL GREEN TRIBUNAL,

AT NEW DELHI

IN

ORIGINAL APPLICATION NO. 295/2023

IN THE MATTER OF:

DIMPAL KUMAR .....APPLICANT

VERSUS

STATE OF PUNJAB & OTHRS ...RESPONDENTS

INDEX

S NO	Particulars	Page No
1	Additional document for placement on record	1
2	**Annexure A-1** **Copy of news report dt 21.7.2025**	2-3

Filed by

I K Kapila
Advocate for Applicant
D 082, DLF Capital Greens, New Delhi

Mail : kapilaik@yahoo.co.in

9582063272

New Delhi
Date: 21.07.2025

दैनिक सवेरा टाइम्स
अंधेरे से उजाले की ओर...

गोबिंदगढ़ की फैक्ट्रियों की चिमनियों से काला धुआं निकलना बरकरार

प्राकृतिक गैस को छोड़ कर कोयले की ओर बढ़ रही औद्योगिक इकाइयां, सरकार सस्टेनेबल ग्रोथ की ओर ध्यान दे : आईसरा

सवेरा न्यूज/लक्की

मंडी गोबिंदगढ़, 20 जुलाई : मंडी गोबिंदगढ़ शहर एक बार फिर औद्योगिक चिमनियों से निकलने वाले धुएं की समस्या से जूझ रहा है, जिसमें सांस लेने, आंखों में जलन, फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित लोगों के साथ साथ आम लोगों के सेहत पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। हैरत की बात तो यह है कि प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि इस पर कार्रवाई न सामान है। शहर के करीबी गांवों को मिलाकर करीब अढ़ाई लाख की आबादी वाले गोबिंदगढ़ में खासकर स्टील री-रोलिंग मिलें हैं, जो वायु प्रदूषण को बढ़ाने में उच्चतः भूमिका निभा रही हैं। अभी भी औद्योगिक क्षेत्रों में चिमनियों से निकलने वाला काला धुआं साफ तौर पर देखा जा सकता है जो मानव सेहत के लिए चिंताजनक है।

औद्योगिक सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, पिछले कुछ महीनों में एक चिंताजनक रुझान सामने आया है, जिसमें कई औद्योगिक इकाइयों ने प्राकृतिक गैस की जगह कोयले का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है, जोकि प्रदूषण के लिए एक हानिकारक ईंधन है। स्थानीय प्राकृतिक गैस कंपनी आईआरएम एनर्जी ने भी

मंडी गोबिंदगढ़ की विभिन्न औद्योगिक इकाइयों की चिमनियों से निकलता हुआ काला धुआं।

इस चिंताजनक बदलाव की पुष्टि की है। औद्योगिक इकाइयों में ईंधन की लागत में अक्सर कोयले का प्रयोग ज्यादा होने लगा है जबकि पीएनजी गैस पर्यावरण के अनुकूल है, जिससे प्रदूषण नहीं होता। किंतु पीएनजी की कीमत 42 रुपए के आसपास हैं जबकि कोयला करीब 15 रुपए किलो के हिसाब से मिलता है। कोयला सस्ता होने के कारण उद्योग इकाइयां कोयले को ज्यादा तरजीह दे रही हैं।

अधिकतर उद्योगों ने बंद की पीएनजी गैस : आईआरएम एनर्जी के एक प्रतिनिधि ने बताया, पिछले 4 महीनों में मंडी गोबिंदगढ़ के 9 उद्योगों ने प्राकृतिक गैस का उपयोग बंद कर दिया है और उद्योगों के साथ हुई हमारी बातचीत के अनुसार, उन्होंने अपने औद्योगिक ईंधन की खपत के लिए कोयले का उपयोग करना शुरू कर दिया है। आईआरएम के प्रतिनिधि ने आगे बताया कि अभी तक मंडी गोबिंदगढ़ में कुल 50 से अधिक उद्योगों ने कोयले का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है, जोकि पहले नेचुरल गैस पर कार्यरत थी।

कोयले से हो रहा यह शारीरिक नुक्सान

एक रिपोर्ट के अनुसार कोयले से चलने वाला बिजली संयंत्र पर्यावरण प्रदूषण का एक विपुल जनक है, जो वायुमंडल में एरोसोल के रूप में बड़ी मात्रा में कण छोड़ता है। कोयले के सूक्ष्म कणों, नैनोकणों और इसके उप-उत्पादों जैसे खतरनाक पदार्थों का सांस के जरिए शरीर में जाना मानव स्वास्थ्य के लिए एक अदृश्य खतरा है। हालांकि कोयला मुख्य रूप से कार्बन से बना होता है, लेकिन इसमें सल्फर, नाइट्रोजन, ऑर्गेनोमेटेलिक यौगिक और खिनज सहित कई अन्य घटक होते हैं, जो वायुमंडल के संपर्क में आने वाले अत्यंत विषैले द्वितीयक यौगिकों के निर्माण में योगदान करते हैं। इन खतरनाक पदार्थों के लगातार सांस के जरिए शरीर में जाने से श्वसन और हृदय रोग, प्रणालीगत सूजन और तंत्रिका-विघटन जैसी कई बीमारियां हो सकती हैं। फेफड़ों, हृदय, प्रजनन प्रणाली,मिस्तष्क, डीएनए और सामान्य रूप से मानव स्वास पर कोयले के सांस लेने के प्रभाव को कवर करती है।

क्या कहते हैं आइसरा के प्रधान विनोद वशिष्ठ

ऑल इंडिया स्टील री रोलर्स एसोसिएशन के प्रधान विनोद वशिष्ठ से बात की गई तो उन्होंने कहा कि उद्योग और मानव सेहत के लिए सरकार सस्टेनेबल ग्रोथ की ओर ध्यान दे रही है किंतु यह सभी औद्योगिक क्षेत्रों पर लागू होना चाहिए। सरकार चाहती है कि मानवीय शरीर पर कोयले का दुष्प्रभाव न हो और इंडस्ट्री ग्रोथ भी बरकरार रहे। पंजाब सरकार भी इसका हल ढूंढ रही है ताकि इंडस्ट्री और पर्यावरण को नुक्सान न हो।

अमर उजाला | देश | amarujala.com

स्टील टाउन में कोयला बना घातक मंडी गोबिंदगढ़ बीमारियों से घिरा

प्राकृतिक गैस छोड़ कोयले का इस्तेमाल कर रहीं औद्योगिक इकाइयां

संवाद न्यूज एजेंसी

मंडी गोबिंदगढ़। स्टील टाउन में अब कोयला घातक बन चुका है। ज्यादातर इंडस्ट्री में पीएनजी का इस्तेमाल बंद हो चुका है और कोयले का प्रयोग किया जाने लगा है। वजह है कि प्राकृतिक गैस (पीएनजी) 42 रुपये यूनिट के आसपास है और कोयला सिर्फ पंद्रह रुपये प्रति किलो है।

कोयले के इस्तेमाल करने से चिमनियों से निकलने वाला काला धुआं वातावरण में इस कदर घुल चुका है कि सांस लेने, आंखों में जलन, फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित लोगों के साथ आम लोगों की सेहत पर इसका प्रभाव डाल रहा है। इस मामले को लेकर सरकार और प्रदूषण नियंत्रण विभाग कोई कार्रवाई नहीं कर रहा। करीबी गांवों को मिलाकर करीब ढाई लाख की आबादी वाले गोबिंदगढ़ में करीब 245 स्टील री-रोलिंग मिलें हैं।

आईआरएम एनर्जी के एक प्रतिनिधि ने बताया, पिछले चार माह में मंडी गोबिंदगढ़ के नौ उद्योगों ने प्राकृतिक गैस का उपयोग बंद कर दिया है। उद्यमियों से बातचीत के अनुसार उन्होंने अपने औद्योगिक ईंधन की खपत के लिए कोयले का उपयोग करना शुरू कर दिया है। आईआरएम के प्रतिनिधि के अनुसार अभी तक मंडी गोबिंदगढ़ में कुल 50 से अधिक उद्योगों ने कोयले का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है।

मंडी गोबिंदगढ़ में कोयले की इंडस्ट्री की चिमनियों से निकलता काला धुआं। संवाद

सरकार इसका ढूंढ रही हल : विनोद वशिष्ठ

ऑल इंडिया स्टील री रोलर्स एसोसिएशन के प्रधान विनोद वशिष्ठ ने कहा कि उद्योग व मानव सेहत के लिए सरकार सस्टेनेबल ग्रोथ की ओर ध्यान दे रही है। यह सभी औद्योगिक क्षेत्रों पर लागू होना चाहिए। सरकार चाहती है कि मानवीय शरीर पर कोयले का दुष्प्रभाव न हो और इंडस्ट्री ग्रोथ बरकरार रहे। पंजाब सरकार इसका हल ढूंढ रही है। जिससे इंडस्ट्री और पर्यावरण को नुकसान न हो।

रिपोर्ट : कोयले से हो रहा शारीरिक नुकसान

एक रिपोर्ट के अनुसार कोयले से चलने वाला बिजली संयंत्र पर्यावरण प्रदूषण का जनक है। यह वायुमंडल में एरोसोल (हवा या किसी अन्य गैस में निलंबित ठोस या तरल कणों का मिश्रण) के रूप में बड़ी मात्रा में कण छोड़ता है। कोयले के सूक्ष्म कणों, नैनोकणों और इसके उप-उत्पादों जैसे खतरनाक पदार्थों का सांस के माध्यम से शरीर में जाना मानव स्वास्थ्य के लिए एक अदृश्य खतरा है।

- हालांकि कोयला कार्बन से बना होता है पर इसमें सल्फर, नाइट्रोजन, ऑर्गेनोमेटेलिक यौगिक और खनिज सहित कई अन्य घटक होते हैं, जो वायुमंडल के संपर्क में आने वाले अत्यंत विषैले द्वितीयक यौगिकों के निर्माण में योगदान करते हैं। इन खतरनाक पदार्थों के लगातार साँस के जरिए शरीर में जाने से श्वसन और हृदय रोग, प्रणालीगत सूजन और तंत्रिका-विघटन जैसी कई बीमारियां हो सकती हैं।